बैंगन की फसल में रोग व्याधियाँ एवं कीट प्रबंधन

कृषि कुंभ (जुन, 2022), खण्ड 02 भाग 01, पृष्ठ संख्या 16–17

बैंगन की फसल में रोग व्याधियाँ एवं कीट प्रबंधन

डॉ. रुद्र प्रताप सिंह, डॉ. अभिनव कुमार एवं रोहित कुमार

कृषि विज्ञान संकाय,

भगवंत विश्वविधालय, अजमेर, (राज.)

E.mail : rudra.agento@gmail.com

बैंगन भारत की मूल फसल है, यह आलू और टमाटर के बाद भारत में तीसरी मुख्य सब्जी है। पूरे विश्व का एक चौथाई बैंगन उत्पादन क्षेत्र भारत में है, बैंगन के बहुत से उपयोग हैं, ज्यादातर इसका अचार और सब्जी के रूप में प्रयोग होता है। चूँकि इसका सीधा संबंध मानव आहर से है, तो बैंगन की जैविक खेती का अपना महत्व है, बैंगन की फसल में विभिन्न प्रकार के कीट व रोग भारी नुकसान पहुंचाते हैं। जिससे फसल की गुणवत्ता पर असर पड़ता है, वहीं फसल पैदावार भी प्रभावित होती है। कीट व रोगों की समय रहते रोकथाम कर ली जाए तो अच्छी पैदावार ली जा सकती है।

बैंगन का तना एवं फल भेदक कीट

बैंगन के पौधे के लिए एक गंभीर कीट है। यह तना एवं फल भेदक केवल सभी प्रकार के अंडे पौधों या बैंगन पर संक्रमित होता है और यह आंतरिक रूप से निविदा शूट और फलों को नुकसान पहुंचाता है। पौधे को नुकसान मुख्य रूप से लार्वा के कारण होता है, जो बड़ी पत्तियों के मध्य रिब के टर्मिनल भाग के माध्यम से छिद्र करता है और ''मृत दिल'' का कारण बनता है। बाद में यह फूल की कलियों और फलों में भी प्रवेश कर जाता है। यह अपने उत्सर्जन द्वारा प्रवेश छेद को प्लग करता है। संक्रमित टर्मिनल शूट और फल अंततः बाहर निकल जाते हैं। कीट बैंगन की फसलों को 70 से 100% नुकसान पहुंचा सकता है।

समेकित कीट प्रबन्धन

बैंगन की लगातार मोनो क्रॉपिंग से बचें। इनमें प्रभावित शाखाओं को कीट सहित तोड़कर नष्ट करते है। फसल में फेरोमोन पाश लगाकर इस कीट के प्रभाव को कम किया जा सकत है। फलों पर कीट पर प्रकोप दिखाई देने पर नीम के बीच के रस का 4% की दर से घोल बनाकर 15 दिन के अंतराल पर फसल पे छिडकें। पूर्ण नियंत्रण न होने की दशा में कीटनाशी दवा जैसे– क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 18.5% एससी /50 मि. ली./एकड़ दर से प्रयोग करें। नियमित कीटनाशक आवेदन तना एवं फल भेदक कीट के प्रबंधन में मदद नहीं कर सकता है। अत्यधिक व्यवस्थित जहर आम तौर पर कीट को मारने के लिए उपयोग किया जाता है जो सब्जियों को उपभोग करने के लिए असुरक्षित बनाता है।

दूसरी ओर कीट ने कीटनाशकों के प्रति सहिष्णुता विकसित कर ली है और इसे प्रबंधित करना मुश्किल हो गया है। अगर हम जीवन चक्र को समझ सकते हैं ल्यूसिनोड्स कीट, एक एकीकृत दृष्टिकोण को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है।

जैसिड्स

ये हरे रंग के कीट पत्तियों की निचली सतह से लगकर रस चूसते हैं। जिसके फलस्वरूप पत्तियां पीली पीली पड़ कर पत्तियां जमीन पर गिर जाती है और पौधे कमजोर हो जाते हैं।

एपीलेकना बीटल

ये कीट पौधों की प्रारंभिक अवस्था में बहतु हानि पहुंचाते हैं। ये पत्तियों को खार छलनी सदृश बना देते हैं। अधिक प्रकोप की दशा में पूरी फसल बर्बाद हो जाती है। इनकी रोकतम के लिए थायमेथोजेम 25% डब्लू जी (50 मि.ली. /एकड़) का 14 दिन के अंतर पर प्रयोग करें।

आर्द्र गलन

यह पौधशाला का प्रमुख फुफुदं जनित रोग है इसका प्रकोप दो अवस्थाओं में देखा गया है। प्रथम अवस्था में, पौधे जमीन की सतह से बाहर निकलने के पहले ही मर जाते हैं एवं द्वितीय अवस्था में, अंकुरण के बाद पौधे जमीन की सतह के पास गल कर मर जाए हैं। इसकी रोकथाम के लिए बाविस्टिन (2 ग्रा./कि.ग्रा. बीज) नामक फफुन्दनाशी दवा से बीजों का उपचार करें। साथ ही अंकुरण के बाद ब्लूकॉपर–50 (३ ग्रा./ली.) या रिडोमिल एम् जेड अथवा इंडोफिल एम–45(2 ग्रा/ली.) से क्यारी की मिट्टी को भिगो दें।

फल सड़न

यह फफूंद के कारण होने वाला एक बीज जनित रोग है। प्रभावित पत्तियों पर प्रारंभ में छोटे–छोटे गोल भूरे धब्बे बन जाते हैं तथा बाद में अनियमित आकार के काले धब्बे पत्तियों के किनारों पर दिखाई देते हैं। रोगी पत्तियां पीली पड़कर सूख जाती है। फलों पर धूल कणों के समान भूरी रचनाएं दिखाई पड़ती हैं जो बाद में बढ़कर काले धब्बों के रूप में दिखाई देने लगती है। इस रोग के नियंत्रण के लिए बाविस्टिन (2 ग्रा./कि.ग्रा. बीज) से बीजोपचार के बाद बुआई करें तथा फसल पर 0.1% बाविस्टिन का घोल बनाकर 10 दिनों के अंतर पर पौधों की प्रारंभिक अवस्था में 2–3 बार छिड़कें।

जीवाणु दृजनित मुरझा रोग

यह सोलेनेसी परिवार की सब्जियों की प्रमुख बीमारी है। इसके प्रकोप से पौधे मर जाते हैं। इसके बचाव हेतु प्रतिरोधी किस्में जैसे–स्वर्ण प्रतिभा, स्वर्ण श्यामली लगाएं। लगातार बैंगन, टमाटर, मिर्च एक स्थान पर न लगा कर अन्य सब्जियों का फसल चक्र में समावेश करें। खेत में 10 क्वि./हे. की दर से करंज की खली का प्रयोग रोपाई से 15 दिन पूर्व करने से रोग के प्रभाव में कमी आती है। रोपाई के पूर्व पौधों की जड़ों को स्ट्रेप्टोसाइक्लिन (500 मि.ग्रा./ली.) के घोल में आधे घंटे तक डुबोएं।